॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से
समस्त आर्यजगत् को
होली के त्यौहार की
हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष ३२, अंक १४ **एक प्रति : ३ रुपये**
सोमवार २ मार्च, २००९ से ८ मार्च, २००९ तक
विक्रमी सम्वत् २०६५ दयानन्दाब्द : १८५
सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०९ वार्षिक : १५० रुपये
फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
Website : www.delhisabha.com

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में समस्त आर्यसमाजों की ओर से

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव (ऋषिमेला) सम्पन्न

महर्षि दयानन्द जी के बोध ने समस्त संसार को नई जागृति दी : किरण वालिया

महर्षि दयानन्द सरस्वती एक ऐसे महापुरुष थे, जिन्होंने सच्चे ज्ञान का बोध कर उसे संसार में फैलाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। यदि वे सत्य की खोज को अपने तक सीमित रख लेते तो आज संसार भर में अज्ञानता का भयंकर बोलबाला होता। महर्षि दयानन्द जी के बोधन ने समस्त संसार को एक नई जागृति दी।" ये विचार दिल्ली की स्वास्थ्य मन्त्री मान्य श्रीमती प्रो. किरण वालिया ने महर्षि दयानन्द जी के बोधोत्सव समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज ने जिस प्रकार की जागृति भारत के सर्व समाज में फैलाई, उसी का कारण है कि आज हर जाति के लोग उच्च पदों पर विराजमान है तथा इन सर्वोच्च पदों पर बैठने के लिए महिला तथा पुरुष में किसी प्रकार का कोई भेद नहीं रह गया है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द जी के विचारों को यदि आज वर्तमान पीढ़ी को बताया जाए, तो ही बोधोत्सव जैसे आयोजन की सफलता होगी। इससे पूर्व उनका समारोह में पधारने पर आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी द्वारा किया गया।

बोधोत्सव के अवसर पर दिल्ली की स्वास्थ्य मन्त्री प्रो. किरण वालिया जी को महर्षि दयानन्द जी का चित्र भेंट करते श्री सुरेन्द्र रैली एवं श्रीमती शीला ग्रोवर जी

महर्षि दयानन्द जी का चित्र स्मृति रूप में उन्हें भेंट करते हुए दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने आर्यजनता को उनका परिचय कराते हुए कहा कि श्रीमती किरण वालिया जी आर्य परिवार की ही सदस्या हैं। इनके नाना जी स्वामी सत्यव्रत जी थे तथा आर्यसमाज के कर्मठ नेता डीएवी आन्दोलन के अनन्य सिपाही श्री शान्तिलाल सूरी की भांजी हैं।

– **शेष पृष्ठ 5 पर**

दर्शन व्याख्या - २

आस्तिक और नास्तिक दर्शन

गतांक से आगे :–

'निज शक्त्यभिव्यक्ते: स्वत: प्रामाण्यम्।' (सांख्य. 5/5/1) सांख्यदर्शन के इस मत को स्वीकृति प्रदान करते हुए देव दयानन्द ने भी वेदों को स्वत: प्रमाण एवं अन्य आर्ष ग्रन्थों के वेदानुकूल मन्तव्यों को परत: प्रमाण माना है।

'वेदान्त दर्शन' के अनेक सूत्रों में भी वेदज्ञान की प्रामाणिकता का उल्लेख हुआ है। इन सूत्रों में से कुछ सूत्र हैं :– 'शास्त्रयोर्निहयत्वात्' (वेदान्त 1/1/3), 'जन्माद्यस्य यत:' (वेदान्त 1/1/2), 'तत्तु समन्वितम्' (वेदान्त 1/1/4)। वेदान्त दर्शन के इन सूत्रों के अनुसार शास्त्र नित्य हैं अर्थात् वेदादि शास्त्रों का निर्माता वह नित्य परमात्मा है, अत: वेदादि शास्त्र भी नित्य हैं। सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और प्रलय का हेतु भी वही परमेश्वर है। सृष्टि का रचयिता और वेदादिशास्.ों के ज्ञान का देने वाला परमात्मा एक ही है। इस प्रकार वेदान्त दर्शन (उत्तर मीमांसा) में ईश्वरीय सत्ता और वेदज्ञान की प्रामाणिकता का उल्लेख हुआ है। मीमांसा दर्शन (पूर्व मीमांसा) में महर्षि जैमिनी ने शब्दों के साथ अर्थ के सम्बन्ध का उल्लेख करते हुए स्पष्टत: यह लिखा है कि जगत् के पदार्थों की निर्मिति वैदिक शब्दों के आधार पर हुई है। स्पष्टत: सभी आस्तिक दर्शनों में वेद के प्रमाण और ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया गया है और वेद प्रामाण्य के कारण इन सभी दर्शनों (षड्दर्शनों) को आस्तिक दर्शन कहते हैं। अस्तिक षड्दर्शनों के सम्बन्ध में एक और उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि इनमें परस्पर अविरोध है। कुछ विद्वानों (?) ने इन दर्शनों में विरोध की कल्पना की है, किन्तु महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के तृतीय समुल्लास में इस भ्रांति का इन शब्दों में निराकरण किया है "षड्दर्शनों में परस्पर कोई विरोध नहीं है।" कारण यह कि इन छ: दर्शनों में सृष्टि विद्या के छ: भिन्न–भिन्न अवयवों का विवेचन किया गया है। सृष्टि के कर्म कारण की मीमांसा 'मीमांसा दर्शन' में, समय की विवेचना 'वैशेषिक दर्शन' में, उपादान कारण की व्यवस्था 'न्यायदर्शन' में पुरुषार्थ की विवेचना 'योगदर्शन' में, तत्त्व–परिगणन 'सांख्य दर्शन' में और निमित्त कारण परमपिता परमेश्वर की व्याख्या 'वेदान्त दर्शन' में की गई है। इस प्रकार ये षड्दर्शन एक–दूसरे के विरोधी न होकर पूरक हैं और सृष्टि विद्या के विभिन्न घटकों को व्याख्यायित करते हैं। *– क्रमश:*

– डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया

Question & Answer

Advaitwad

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. **- Editor**

The questions are answered by Swami Ramswarup ji.

Q.: I feel Advaita is well said in Vedas. From the principles of God being omnipresent and part of God being FULL in all respect as God is complete and so part of God is also complete. **Vishal**

Ans.: Present advaitwad is not mentioned in Vedas. God cannot be divided into parts. A chain has beads which are in parts but thread is not in parts. I accept the principle of Vedas being eternal knowledge emanates direct from God which never tells about present advaitwad.

Q.: In my body God exists(Since God is omnipresent). If I divide my body in to infinite divisions, in each of these divisions God exists (again, since God being omnipresent). And infinity means never ending. So in my body there are never ending number of same God. Correct or not? **Vishal**

Ans.: Body being non-alive and destructible can be divided into parts but not alive almighty God or soul. Soul is not almighty. When body has been divided then God is not only present into every divided parts of the body but is also present between the space of the every body as He (God) was before.

Q.: Again part of God is God in full as God is complete well stated by poornamadah poornamidam poornat poonmudchyate. Poornasya Poornmewa vashishyte om shanti, shanti, shanti. mantra. **Vishal**

Ans.: Parts of God are not possible. The meaning of puranmada.. (Atharvaveda 10/8/29) does not apply in case of parts, etc.

Q.: So my body is built by infinite number of God. **Vishal**

Ans.: God is one and not in infinite numbers. ***To be continued....***

देववाणी : संस्कृत

संस्कृत–विज्ञानम्

– डॉ0 रामाशीष पाण्डेय:

गतांक से आगे :–

"पार्थवस्य रसे देवा भगस्य तन्वो बले"

जले अग्निसोमयो: तत्त्वद्वयो: स्थिति: स्वीकृता –

"अग्नीषोमौ विभ्रत्याप इति मृता:।
तीव्रो रसो मधुपृचामृरंगम: आ प्राणेन।"

जलस्योत्पत्तिविषये आधुनिकविज्ञज्ञानमतेन हाइड्रोजनस्य भागद्वयस्य आक्सीजनस्य च भागस्यैकस्य मेलनेन जलमुत्पद्यते। वैदिकसाहित्ये तु अग्नि: आक्सीजनस्य सोम: हाइड्रोजन्य वाचक: प्रतीयते। जलात् अग्ने: उत्पत्ति अपि तत्र प्राप्यते – "या अग्निं गर्भं दधिरे"। जलस्य संघर्षणेन जलविद्युत् जायते। जले स्थितोऽग्नि: वाडवाग्नि:।

संस्कृते वनस्पतिविज्ञानम्

बनानां पाता वा पालयिता वा वनस्य पति: वनस्पति:। यजुर्वेद वृक्षणां विभागो दृश्यते –

"या फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी:"

अन्नं रोगरहितं निर्विषं भोज्यं भवति तथा सविषं रोगसहितं च अभोज्यं भवति। अथर्ववेदे यथा – "ब्रीहियवौ एतौ यक्ष्य वि वाधेते।"

पुनश्च – "यद् आद्यं यद् अनाद्यं सर्वं ते अन्नमविषं कृणोमि।"

तत्रैव अवि तत्त्वं देवतारूपेण प्रतिपादितम्। एतत् तत्त्वं ऋतम् अमृतम् अस्ति। एतस्मात् एव वृद्वाा: हरिता: भवन्ति। यथा –

"अविर्वै नाम देवता ऋतेनास्ते परीवृता तस्या रूपेणेमे वृक्षा हरिता हरितस्रज:।।"

आंग्लभाषाया: क्लोरोफिलं नामकं तत्त्वं तादृशमेव कार्यं करोति।

आयुर्वेदविज्ञानम् –

ऋग्वेदस्य उपवेदरूपेण अथर्ववेदस्य उपांगरूपेण आयुर्वेद: वर्णित:। 'शतायुर्वैपुरुष: अनेन श्रुतिवाक्येन मानवानाम् आयु शतं वर्षाणि मन्यते। ऋग्वेदे यजुर्वेद च कथितमस्ति यत् देवै: स्थापितं पूर्णायु: व्यशेमहि प्रान्नुयाम् – "व्यशेमहि देवहितं यदायु:"।

वैदिकसाहित्ये प्राणै: सह अमृतस्य सम्बन्ध: विवेचित:। देवानां वैद्यौ अश्विनी–कुमारौ विद्येते। चरकसुश्रुतप्रभृतयो ग्रन्था: चिकित्साशास्त्रे प्रसिद्धा:। संस्कृतग्रन्थानुसारं चिकित्साया: त्रिविधत्वं प्राप्यते–आसुरी चिकित्सा, मानुषी चिकित्सा, दिव्यचिकित्सा चेति। प्राणापानौ वै अश्विनौ। शल्यादिस्थूल प्रक्रियया ग्रन्थि–परिवर्तनेन यौवनस्य प्राप्ति: भवति– इयं चिकित्सा आसुरी। सौम्यगुणयुक्त–औषधिभि: स्वास्थस्य यौवनस्य च प्राप्ति: मानुषीचिकित्सा। प्राणविद्यामाध्यमेन आयुष्यं जीवनं यौवनम् अमृतं यदाप्नोतीति दिव्यचिकित्साविधि:।

संस्कृते गणितविज्ञानम् – ज्यातिर्विज्ञानञ्च

ज्योतिषम् एकं शास्त्रं यस्य अंगमस्ति गणितम्। संख्याया विवेचनं वेदे एव प्रथमं प्राप्यते। यजुर्वेदग यथा – "एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे ..... ." पुन: "चतस्रश्च मे अष्टौ च मे, अष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च मे षोडश च मे. .." संख्यासंज्ञानां सूक्तौ तत्रैव – एक, दश, शत, सहस्र, अयुत, नियुत, प्रयुत, अर्बुदादि प्राप्यते। संस्कृतभाषायां गणिते गुणनं, भाग:, वर्ग:,वर्गमूलम्, घन:, घनमूलं चादि परिकर्माणि परिकल्पितानि।

संस्कृते धातुविज्ञानाम्

शुक्रनीतौ कथितमस्ति –

सुवर्णं रजतं ताम्रं वङ्गं सीसञ्च रङ्गकम्।
लोहञ्च धातव: सप्त ह्येषामन्ये तु संकरा:।।

अत्र सप्तधातव: मूलरूपेण अन्य च संकररूपेण धातव: वर्णिता:। समरांगणसूत्रधारस्य यन्त्राध्याये धातुनां संकरस्य वर्णनं प्रभूतं प्राप्यते। संकरा धातव: केन प्रकारेण क्रियन्तेस्म इति तत्रैव वर्णितमस्ति –

यथापूर्वं तु श्रेष्ठं स्यात्स्वर्णं श्रेष्ठतरं मतम्।
वंगताम्रभवं कांस्यं पित्ततं ताम्ररंगजम्।।

तत्र वायुयानस्य कृते धातूनां निर्माणं कथं भवेत् इत्यपि वर्णितम्।

अनेन प्रकारेणसंस्कृते कृषिविज्ञानस्य, पर्यावरणविज्ञानस्य खगोल वास्तुसंगीत प्रभृतिविषयाणां प्रभूतं वर्णनमस्ति। वैज्ञानिक – आविष्काराणां मार्गदर्शकरूपेण इयं भाषा अद्यापि प्रतिष्ठिता। इत्यत्र संस्कृते विज्ञानं संक्षेपेण संकेतितम्।

– विद्यानगरम्, पश्चिमी रोड सं. – 3, हरमूरम्, रांची (झारखण्ड) – 824002

– शेष पृष्ठ ६ पर

अंधकार बढ़ रहा है !

– अभिमन्यु कुमार खुल्लर

एक शायर ने ऋषि के निर्वाण पर बहुत सटीक श्रद्धांजलि दी थी – एक सूर्य पश्चिम आकाश में अस्त हो रहा है और एक अजमेर की भिनाय कोठी में।

खगोलीय पिण्ड के सूर्यास्त के पश्चात् पुनः सूर्योदय का समय मिनट–सैकेण्ड तक विधाता ने निश्चित कर रखा है और यह ज्ञान मानव को भी प्राप्त है कि सूर्योदय कब होगा। अजमेर की भिनाय कोठी में हुए सूर्यास्त के सूर्योदय का परमपिता परमेश्वर को तो अवश्य मालूम होगा, परन्तु वह यह ज्ञान हमें नहीं देगा – 'यह एक मात्र उसका अधिकार क्षेत्र है, जिसमें दखलंदाजी की इजाजत कभी नहीं देगा। पहिले भी नहीं दी थी। वह अपनी कारसाजी –कारीगरी कभी किसी को नहीं बताता। आंख बनाने की कारीगरी किसी को नहीं बताई – बस, केवल रिपेयर की अक्ल दे दी। बस, बेटा, तेरी सीमाएं निश्चित हैं और मैं सीमा से परे।

30 अक्तूबर, 1883 संध्याकाल हो रहा था। मरणासन्न महर्षि ने दिन, वार, समय पूछा। ऋषिभक्त ने बताया आज मंगलवार है, अमावस्या है, दीपावली का पर्व है, सूर्यास्त हो रहा है। महर्षि मौन हो गए। सबको पीछे आने का संकेत कर प्रभु का स्मरण किया और एक दीर्घ श्वास लेकर प्रभु की शरण में चले गए। सूर्यास्त पूर्ण हो गया।

अभी सूर्योदय नहीं हुआ है। 125 वर्ष हो रहे हैं। हे प्रभु ! तू भी कितना अद्भुत है। हमारी पृथ्वी से 13 लाख गुणा बड़े, 15 करोड़ किमी. दूर आकाशीय पिण्ड सूर्य को पुनः पैदा करने में तुझे 12 घंटे का समय लगता है – दयानन्द की आत्मा को पुनः भेजने में 125 वर्ष लगा दिए हैं और बताता भी नहीं कि कब भेजेगा? मुझे तो शक है कि भेजेगा भी या नहीं?

हे प्रभु ! अंधकार बहुत बढ़ चुका है और निरन्तर बढ़ता ही जा रहा है। हम 25 से 125 करोड़ हो गए हैं। यदि अंकगणित की भाषा बोलें तो अंधकार पांच गुणा ज्यादा बढ़ चुका है – पर अंधकार गणित के पैमाने से थोड़े ही बढ़ता है; वह तो सुरसा के मुख के समान समस्त पृथ्वी को निगलने को आतुर है।

60 वर्ष हुए हमें स्वतन्त्र हुए। हम महर्षि के बताए राष्ट्रीय एकता के सूत्रों को बिल्कुल भूल गए और नए सूत्र गढ़ नहीं पाए। अंधे की तरह उस दिशा में चल दिए हैं जिन्हें ऋषि–महर्षियों ने नहीं – स्वार्थी लोगों ने निर्धारित किए हैं।

महर्षि ने कहा राष्ट्रीय भाषा के बिना एकता नहीं हो सकती। यह कभी नहीं कहा कि गुजराती राष्ट्रभाषा हो सकती है – कह सकते थे; क्योंकि वह टंकारा जिला राजकोट गुजरात में पैदा हुए थे। अंग्रेजी राज्य था, उन्हें कहना चाहिए था – अंग्रेजी राजभाषा है। इसलिए यही भाषा ठीक रहेगी। महर्षि ने कहा नहीं, अंग्रेजी कभी देश की भाषा हो नहीं सकती – न ही होनी चाहिए। हिन्दी होनी चाहिए – वही भारत की राजभाषा और राष्ट्रभाषा हो सकती है। और मजे की बात यह है कि हिन्दी पैदा हो रही थी – हिन्दी का स्वरूप – बोलियों से निकल रहा था – ब्रजभाषा, अवधि, बुन्देलखण्डी, मैथिली आदि अनेक बोलियां हर 25 मील पर अलग – बोली जा रही थीं। महर्षि ने ललित, मधुर संस्कृत छोड़ हिन्दी में प्रवचन किए। ग्रन्थ लेखन किया। वह कभी दक्षिण भारत नहीं गए, परन्तु उनकी दिव्य दृष्टि ने निर्भ्रान्त रूप देख लिया था कि भारत भूमि में सर्वत्र संस्कृत बोलचाल व लेखन की भाषा रही है। वह न केवल सांस्कृतिक क्षेत्र में स्वीकृत भाषा है, पर उससे प्रसूत हिन्दी सर्वत्र स्वीकृत राजभाषा व राष्ट्रभाषा के रूप में देश के सभी प्रान्तों के सामान्य जन

– शेष पृष्ठ 6 पर

ब्रह्म-सूत्र द्वितीय अध्याय-द्वितीय पादः (26)

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'

नासतोऽदृष्टत्वात्।।26।।

अर्थ – (न) नहीं (असतः) अभाव से [भाव की उत्पत्ति होती हो ऐसा] (अदृष्टत्वात्) संसार में कहीं भी न देखे जाने से।

भावार्थ – सूत्रकार के अनुसार अभाव से भाव की उत्पत्ति नहीं होती क्योंकि दुनिया में दिखाई नहीं देता कि अभाव यानी कुछ भी न हो और उससे भाव अर्थात् कुछ पैदा हो जाए। किसी वस्तु के उत्पन्न होने से पहले उसके कारण का होना आवश्यक है। यदि अभाव से भाव की उत्पत्ति मानी जाए तो बीज के बिना ही अंकुर पैदा हो जाए, परन्तु ऐसा होता नहीं है।

हमने इससे पूर्व 20–21 सूत्र में देचाा था कि क्षणिकवादियों के अनुसार पूर्व क्षण के नष्ट होने पर उत्तर क्षण अस्तित्व में आती है, जिस प्रकार के नष्ट होने पर अंकुर पैदा होता है। इसका मतलब यह हुआ कि किसी पदार्थ की सत्ता के क्षण में उसके कारण का अस्तित्व नहीं है। इसका अभिप्राय यह है कि प्रत्येक पदार्थ बिना कारण के अभाव मात्र से उत्पन्न हो जाता है। प्रस्तुत सूत्र में सूत्रकार का यह मत है कि अभाव से भाव की उत्पत्ति मानना पूर्णरूप से असंगत है, क्योंकि ऐसा कार्य कारणभाव कहीं दिखाई नहीं देता।

इसके अतिरिक्त हम देखते हैं कि जिस वस्तु का बीज बोया जाता है उस बीज से वही वस्तु पैदा होती है। इससे सिद्ध होता है कि प्रत्येक कार्य का अपना अलग कारण होता है। मिट्टी होती तो उससे घड़ा बनेगा, सूत होगा तो उससे कपड़ा नहीं बन सकते। इससे सिद्ध होता है कि कार्य से पहले कार्य का अस्तित्व होना आवश्यक है। वैशेषिक दर्शन में कहा भी है –

"कारणभावात् कार्यभावः।।

(वैशे. द. 4/1/3)

अर्थात् कारण के होने से ही कार्य होता है, और इसके विपरीत–वैशेषिक दर्शन (सूत्र 1/2/1) में कहा है – काारणाभावात् कार्याभावः।। अर्थात् कारण का अभाव होने पर कार्य का भी अभाव होता है। ऊपर दिए गए दूध और बीज के उदाहरण से भी यही सिद्ध होता है कि कारण से कार्य की उत्पत्ति होती है। यदि बीज बोए बिना अंकुर फूट पड़े या बिना दूध के दही जम जाए तब हम कह सकते हैं कि अभाव से भाव की उत्पत्ति हो सकती है। बीज और दूध का नाश नहीं होता केवल इनका स्वरूप (आकार) बदल जाता है अर्थात् कारण बदल जाता है अर्थात् कारण बदलकर कार्यरूप में परिणत हो जाता है।

इसी तथ्य को महर्षि वेदव्यास ने गीता (2/16) में कृष्ण से कहलवाया है – ***नास्तो विद्यते भावो, नाभावो विद्यते सतः।।***

अर्थात् असत् (अभाव) से भाव उत्पन्न नहीं हो सकता और सत् (भाव) से अभाव नहीं होता।

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि क्षणिक वादियों का यह कहना कि अभाव से भाव उत्पन्न होता है। असंगत और शास्त्र विरुद्ध है। इसे किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

– सूत्रकार "अभाव से भाव की उत्पत्ति होती है। इसे मानने में और क्या–क्या दोष हैं इसे स्पष्ट करने के लिए अगला सूत्र प्रस्तुत करते हैं।

– सी–2ए/90 जनकपुरी, नई दिल्ली–58

बोध कथा

तेरी इच्छा पूर्ण हो प्रभो!

– महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

महर्षि दयानन्द अन्तिम सांस ले रहे थे। सारे शरीर में दर्द था। लोग अशान्त थे कि क्या होगा। उनके मुखमंडलों पर उदासी थी, आंखों में आंसू। महर्षि ने मुस्कराते हुए कहा – 'कौन–सी तिथि है आज? कौन–सी घड़ी है, इस समय?"

पास खड़े एक व्यक्ति ने बताया कि तिथि कौन–सी है, समय क्या हुआ है। महर्षि बोले – "तो अब खिड़कियों को खोल दो! बाहर की वायु को आने दो! पंछी का मार्ग न रोको! मेरे पीछे आ जाओ सब लोग। गायत्री मंत्र का जाप करो!" और जब सब लोग जाप कर रहे थे तो महर्षि ने अन्तिम सांस लेते हुए कहा – "तेरी इच्छा पूर्ण हो प्रभो!" इसके अतिरिक्त दूसरी कोई प्रार्थना नहीं की, कोई दूसरी याचना नहीं की।

राजी हैं हम उसी में, जिसमें तेरी रजा है। यहां यूं भी वाह वा है, और वूं भी वाह वाह है।।

रणवीर को फांसी के दण्ड की आज्ञा हुई। सैशन जज ने अपना निर्णय सुनाते हुए कहा –" इसे गले में रस्सी डालकर तब तक लटकाए रखा जाए, जब तक प्राण न निकल जाएं।"

एक कोलाहल मच गया हर ओर। लोग सहानुभूति के लिए मेरे पास आने लगे – रोनी सूरत बनाकर, उदास चेहरे लेकर।

कभी–कभी आंखों में आंसू भरकर वे मेरे पास आते। मुझे हंसता हुआ देखकर आश्चर्य से कहते, "तेरी छाती में हृदय है या पत्थर? तेरे पुत्र को फांसी ही आज्ञा हो गई, उसकी मृत्यु के सामने खड़ी है और तू अब भी हंसता है?" तब मैं गम्भीरता से कहता – "मुझे अपने ईश्वर पर विश्वास है। यदि मेरा कल्याण इस बात में है कि मेरा रणवीर मेरे पास वापस आ जाए तो संसार की कोई शक्ति उसे मार नहीं सकती। और यदि मेरा कल्याण इस बात में है कि वह मेरे पास न आए तो फिर संसार की कोई शक्ति उसे बचा नहीं सकती। तब मैं रोऊं किसलिए?"

तुम्हारी चाही में प्रभो, है मेरा कल्याण। मेरी चाही मत करो, मैं मूरख नादान।।

महर्षि दयानन्द से स्वातन्त्र्य पाठ पढ़ने वाले गोविन्द गुरु की 150वीं जयन्ती सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिष्य गोविन्द गुरु जो कि उदयपुर में स्वामीजी से 3 महीने शिक्षित होकर राजस्थान, म.प्र. और गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों में वैदिक धर्म प्रचार करने वाले महान् गुरु हैं। गोविन्द गुरु की 150वीं जन्म जयन्ती राजस्थान और गुजरात की सीमा पर मानगढ़ पर्वत पर 7, 8 फरवरी को मनाई गई। इसी अवसर राजस्थान के जलियावाला बाग कहाने वाले मानगढ़ बलिदान का शताब्दी समारोह भी मनाया गया।

इस समारोह में सम्मिलित होने के लिए दिल्ली से संघ अधिकारी श्री वेदव्रत मेहता, प्रधान, माता प्रेमलता शास्त्री (महामन्त्री), माता ईश्वर रानी मेहता (मन्त्री, माता रत्नेश बंसल, आचार्य आनन्द प्रकाशन एवं अगले दिन मैं स्वयं जोगेन्द्र खट्टर प्रातः ही थांदला आश्रम से चलकर कुशलगढ़ राजस्थान आश्रम भ्रमण/निरीक्षण करते हुए प्रातः 10 बजे मानगढ़ पर्वत पर पहुंचे जहां आचार्य वेदप्रिय के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हो रहा था। इन तीनों प्रान्तों के भील, बंजारा, मीणा आदि जनजातियों के धार्मिक गुरु तत्कालीन सामन्त एवं बंधुआ प्रथा के विरोधी उद्घोषक गोविन्द गुरु जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती से उदयपुर में तीन महीने रहकर वैदिक शिक्षा प्राप्त की। देश की स्वतन्त्रता हेतु यहीं से पाठ पढ़ा और कूच कर गए अपने क्षेत्र में।

17 नवम्बर 1913 बांसवाड़ा राजस्थान के ही मानगढ़ पर्वत पर अंग्रेजी सरकार ने 14 हजार आदिवासियों पर गोलियां चलाकर डेढ़ हजार आदिवासियों की हत्या कर दी और हजारों लोग घायल हुए। गोविन्द गुरु को फांसी की सजा सुनाई गई किन्तु बाद में आजीवन कारावास दिया। राजस्थान के जलियांवाला बाग कहाने वाले इस काण्ड को इतिहासकारों ने महत्व नहीं फलतः आज पूरा देश इस घटना से अनभिज्ञ हैं।

आचार्य जीववर्द्धन शास्त्री, आचार्य पं. वेदप्रिय शास्त्री के सद्प्रयासों से एक भव्य आयोजन किया गया।

7, 8 फरवरी, 09 को आयोजित इस कार्यक्रम में दिल्ली सहित राजस्थान, म.प्र., गुजरात के लोग सम्मिलित हुए। राजस्थान सरकार के माननीय मन्त्री श्री विजेन्द्र सिंह मालवीय ने भी आकर गोविन्द गुरु के स्मारक को अधिक सौन्दर्यकरण करने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर माता प्रेमलता शास्त्री तथा श्री जोगेन्द्र खट्टर ने भी अपने विचार रखे तथा आदिवासी बच्चों के लिए खोले गए आर्य गुरुकुल रानीबाग का परिचय दिया।

– जोगन्द्र खट्टर, महामन्त्री
आर्यसमाज रानी बाग, नई दिल्ली

महर्षि दयानन्द जी के 125वें निर्वाण वर्ष एवं गोविन्दगुरु के 150वें जन्मदिवस के अवसर पर राजस्थान सरकार के श्रममन्त्री श्री विजेन्द्र सिह मालवीय को 125वें निर्वाण वर्ष का स्मृति चिह्नन देते जोगेन्द्र खट्टर एवं वेदव्रत मेहता जी।

आर्यसमाज सम्भाजी नगर, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में
153 ईसाई हुए परिवारों का शुद्धि संस्कार सम्पन्न

आर्यसमाज सम्भाजी नगर औरंगाबाद एवं सामाजिक समरसता मंच के संयुक्त तत्वावधान में गंगा गोदावरी के तट कायगांव में तहसील गंगापुर के पावन क्षेत्र में 153 ईसाई हुए मातंग समाज के परिवारों का कुल संख्या लगभग 400 व्यक्ति का शुद्धि संस्कार पं. दयाराम बसैये बुधं, मन्त्री आर्यसमाज एवं पं. एडवोकेट जोगेन्द्र सिंह चौहान, पं. जयपाल शास्त्री के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम का संयोजन सामाजिक समरसता मंच संभाजी नगर के डॉ. दिवाकर कुलकर्णी, संजय गर्जे ने किया। कार्यक्रम में अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

– दयाराम बसैये बन्धु, मन्त्री

आर्य बाल भारती स्कूल, पानीपत में
130 बच्चों का उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार सम्पन्न

आर्य बाल भारती स्कूल, पानीपत में वीर हकीकत राय जैसे महान् बलिदानी का बलिदान दिवस 30 जनवरी, 2009 को प्रातःकाल वैदिक यज्ञ के साथ धूमधाम से मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य राजकुमार शर्मा थे। यज्ञ ब्रह्मा ने सभी बच्चों को यज्ञोपवीत देने से पूर्व उसके नियम बताए और कहा कि यह हमारी संस्कृति का चिह्न है। भारत की संस्कृति ऋषियों की संस्कृति है पुरातन संस्कृति है। यज्ञोपवीत लेने वाले बच्चो जीवन में कभी भी धूम्रपान, मद्यमान और मांसाहार नहीं करते। वे अपने माता, पिता, गुरुओं ओर बड़ों का सम्मान करते हैं। इस अवसर पर 30 बच्चों का उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार सम्पन्न किया गया। वयोवृद्ध आर्यनेता श्री रामकिशन जी ने सभी को आशीर्वाद दिया।

– प्रधानाचार्य

आर्यवीर नेत्र चिकित्सालय, गुड़गांव में
क्रिकेटर वीरेन्द्र सहवाग का भव्य स्वागत

सुप्रसिद्ध क्रिकेटर एवं भारतीय क्रिकेट टीम के उप कप्तान श्री वीरेन्द्र सहवाग का गुड़गांव के निःशुल्क हस्पताल आर्यवीर नेत्र चिकित्सालय, नई कालोनी मोड में आगमन पर चिकित्सालय की प्रबन्धक समिति की ओर से पुरजोर स्वागत किया गया।

कॉमिक्स पढ़िए और जीतिए रुपये 5,00,000 तक के इनाम

पांच लाख रुपयों की पुरस्कारी योजना

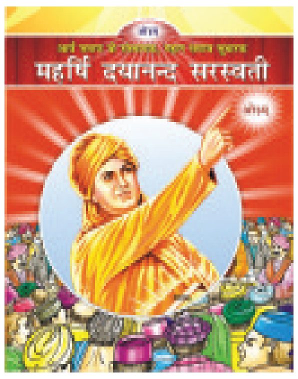

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने के परिवार सहित जोड़ने के लिए तैयार कराई गई कॉमिक्स। ये कॉमिक्स हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराई गई हैं। अन्य भाषाओं में भी इनका अनुवाद कराया जा रहा है। पढ़ने वाले समस्त बच्चों के लिए एक प्रश्न पत्र भी दिया गया है जिसके सही उत्तर देने वालों के लिए 5 लाख रुपये तक के विभिन्न पुरस्कार भी दिए जाएंगे (नियमानुसार)। मूल्य मात्र 12 रुपये प्रति कॉमिक्स। आज ही आर्डर करें।

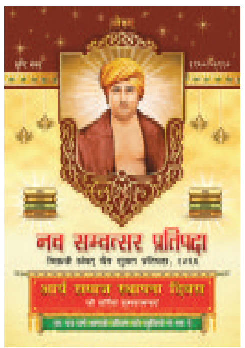

नव वर्ष शुभकामना कार्ड
आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं नव वर्ष के शुभकामना कार्ड आप अपने प्रियजनों, रिश्तेदारों तथा अन्य सभी महानुभावों को **नव वर्ष विक्रमी सम्वत् 2066 की शुभकामनाएं देने के लिए मात्रा 650/- रुपये सैंकड़ा** शुभकामना कार्ड खरीदें और वितरित करें।

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने के छोटी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 18 स्लिप्स का एक सैट मात्र 5/– रुपये प्रति शीट।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष पर उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए तैयार घड़ियां चार आकरों में तैयार कराई गई हैं। सुन्दर, आकर्षक डिजाइन एवं गोल्डन कलर में महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ तैयार ये घड़ियां मात्र 100/– में बड़े आकार में तथा 75/– रुपये में छोटी उपलब्ध हैं। इसके अलावा आर्यसमाजों के सत्संग हॉल में लगाने के लिए सुपर बड़ी घड़ी 300/– रुपये तथा टेबल घड़ी 50/– रुपये मात्र में उपलब्ध हैं।

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव .....

इस पर आर्यजनता ने उनका पुनः करतल ध्वनि से अभिनन्दन किया। साथ ही दिल्ली सरकार ने जन्मदिवस के अवसर पर जो विज्ञापन प्रकाशित किए हैं, चूंकि वे सरकार के अभिन्न अंग हैं अतः उनका इस हेतु अभिनन्दन किया गया।

इससे पूर्व डॉ. कर्णदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ। मुख्य यज्ञमान के रूप में श्रीमती श्रुति आर्य एवं श्री नितिन आर्य, श्रीमती वीणा गुप्ता एवं श्री हरीशगुप्ता, श्रीमती रिम्पी गुप्ता एवं श्री योगेश गुप्ता तथा श्री निमिश आर्य एवं श्री नीरज आर्य उपस्थित थे। यज्ञ श्री मदन मोहन सलूजा के संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर खेत प्रतियोगिताएं आचार्य खुशीराम शर्मा के संयोजकत्व में सम्पन्न हुईं, जिनका उद्घाटन श्री प्राणनाथ घई द्वारा किया गया। इसमें श्री कृपाल सिंह आर्य एवं श्री नरेशपाल आर्य ने सहयोग किया। इस अवसर पर बालकों के लिए भाषण प्रतियोगिता का संयोजन भी किया गया था, जिसके अध्यक्ष श्री बृजभूषण तायल थे। ध्वजारोहण श्रीमती मधु एवं सुभाष आर्य ने किया।

इस अवसर पर 'सुरेश ग्रोवर आर्य वैदिक पुरस्कार' से आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री तथा 'श्रीलालमन आर्य वैदिक पुरस्कार' से डॉ. सुरेन्द्र कुमार को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर दिल्ली सरकार की स्वास्थ्य मन्त्री श्रीमती किरण वालिया मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं तथा सार्वजनिक सभा में डॉ0 वेद प्रताप वैदिक व पद्मश्री श्याम सिंह शशि ने महर्षि दयानन्द बोधोत्सव पर बोलते हुए उनके कृतित्व पर प्रकाश डाला।

इस समारोह में मध्याह्न में श्री हरि ओ३म् जी की अध्यक्षता में 'वैश्विक आतंकवाद और समाधान' विषय पर गोष्ठी हुई जिसमें वैदिक विद्वान डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया ने अपना सारगर्भित भाषण प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर कुमारी सुकृति भटनागर के भजनों की प्रस्तुति भी हुई। इस अवसर पर वैदिक विद्वान श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

– सुशील महाजन, व्यवस्थापक

पृष्ठ 3 का शेष

अंधकार बढ़ रहा है......

बुद्धिजीवियों को मान्य होगी। नहीं यह होना नहीं था। इस क्षेत्र में भी अंधकार बढ़ना ही था। आजाद देश की बागडोर संभाली वकीलों ने, क्योंकि आन्दोलन का नेता भी वकील ही था। बैरिस्टर मोहनदास कर्मचन्द गांधी। उसने बनाया अपने सर्वप्रिय चहेते वकील जवाहरलरल नेहरु को देश का प्रधानमन्त्री; क्योंकि वह अंग्रेजियत में पढ़ा–लिखा वकील था, धार्मिक सहिष्णुता के चलते इस्लाम की ओर झुका हुआ, और by accident हिन्दू। जिसकी सोच अंग्रेजी में, लेखन अंग्रेजी में,वह कैसे स्वीकार कर सकता था कि हिन्दी केवल भारत की राजभाषा बने। वकीलों वाली चाल चली – अंग्रेजी तब तक देश की राजभाषा रहेगी जब तक हिन्दी को राजभाषा के रूप में सभी प्रान्त स्वीकार न कर लें। सब वकीलों को बहुत बच्छी तरह मालूम था कि यह कभी होगा नहीं। 60 वर्ष हो गए अब तक तो नहीं हुआ। उनकी सोच सही सिद्ध हो रही है। हमें उस समय चाहिए था – एक ऐसा कमालपाशा। कमालपाशा ने तुर्की का राज्य संभालते ही देश के सर्वोच्च विद्वानों से पूछा – बताइए, तुर्की देश की राजभाषा कब बन सकती है? किसी ने बीस, किसी ने दस, किसी ने पांच वर्ष बताए। राष्ट्रपति कमालपाशा ने आश्चर्य से कहा – इतना लम्बा समय ! नहीं–नहीं इतना लम्बा समय नहीं दिया जा सकता। यदि मुझे अंग्रेजी का वाक्यांश प्रयुक्त करने दिया जाए तो with a stroke of pen उसने कहा आज और अभी से 'तुर्की' देश की राजभाषा होगी – और हो गई। कोई विरोध का स्वर, कोई रक्तपात, कोई आन्दोलन नहीं हुआ। क्यों? देश आजादी के नशे में, उन्माद में झूम रहा था। विरोध का स्वर मुखर नहीं हुआ। हम भी यही कर सकते थे; लेकिन मौका गंवा दिया, अब कभी नहीं मिलेगा, अंधकार बढ़ता ही जावेगा। देश की भौगोलिक आवश्यकताओं के चलते राज्यों का पुनर्गठन होना चाहिए था – हुआ भाषा के आधार पर – हालांकि आज वह फार्मूला फेल हो चुका है। पृथक–पृथक भाषाएं पृथक–पृथक राष्ट्र को जन्म देंगी? अलगाववाद या? स्वायत्तता को? अगर यह बात नहीं, तो पंजाब का आन्दोलन क्यों चला? क्यों महाराष्ट्र में वही आग जलाई जा रही है। अरे, तुम अन्य प्रान्तीय भारतीयों को महाराष्ट्र की भूमि से कैसे निकाल सकते हो? तुम तो मराठी भाषा एक समुदाय हो, जिसे विदर्भवासी भी स्वीकार नहीं करते। महाराष्ट्र तो भारत है–शिवाजी का भारत। इस क्षेत्र में भी अंधकार फैल रहा है।

हम कितना विरोध करें – ईसाई मतावलम्बी ईसा के मत को धर्म कहते हैं– इसी प्रकार पैगम्बर मुहम्मद के मत को मानने वाले इस्लाम को धर्म कहते हैं। इनकी जड़े जमाने को विश्व की आर्थिक एवं राजनैतिक शक्तियां कल्पनातीत मात्रा में अपने संसाधनों का प्रयोग पूरी ताकत से कर रही हैं।

महर्षि ने कहा था – वेद और केवल वैदिक धर्म ही देश की एकजुटता का आधार हो सकता है; क्योंकि पूरा देश वेद को मानता है। सदियों से मानता चला आया है उस ईश्वर ज्ञान का विभाजन नहीं हुआ और न हो सकता है। उसकी शाखा– प्रशाखाएं निकल सकती हैं। कैथोलिक, प्रोटेसेटेट, चर्च ऑफ इंग्लैंड और न जाने कितनी शाखाएं प्रभु यीशु के मत की हैं। पैगम्बर मुहम्मद को ही क्या पता था कि उनके मत की चार सौ से ज्यादा शाखाएं हो जाएंगी – एक दूसरे से नफरत करने वाली। एक दूसरे के खून की प्यासी? शिया और सुन्नी का विश्वव्यापी झगड़ा सबको विदित है। और धर्मों की तो छोड़ो। हम भी वैदिक धर्म के झण्डे तले इकट्ठे नहीं आ पाए हैं। तैंतीस करोड़ देवताओं की संख्या में इस कलियुग में भी बढ़ोत्तरी हो रही है। गायत्री मां, सन्तोषी मां, शेरावाली मां, हुआ न यहां भी अंधकार का राज्य विस्तार। एक भाषा, एक धर्म के पश्चात् महर्षि ने निर्धारित किया था तीसरा आधार – एक लक्ष्य – एक लक्ष्य का विशेष वर्णन तो महर्षि ने नहीं किया; पर प्रवचनों एवं ग्रन्थों से स्पष्ट है कि भारत की समग्र उन्नति–राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति के लिए मजबूत सांस्कृतिक आधार चाहिए जिससे नवोदित भारत एक स्वस्थ व सबल राष्ट्र के रूप में उभरे। राजनैतिक रूप से भारत स्वतन्त्र, सार्वभौमिक राष्ट्र हो गया है लेकिन ढुल–मुल, तुष्टिकरण नीति के कारण किसी समस्या का निदान नहीं कर सका है और न कर सकेगा। सामाजिक क्षेत्र में अछूतोद्धार, स्त्री शिक्षा, सब प्रकार के भेदभाव की समाप्ति के लिए संवैधानिक व्यवस्था उपलब्ध है; पर आर्थिक रूप में, पूंजीवादी व्यवस्था के कारण गरीब और अमीर का अन्तर कई गुणा बढ़ गया है। खरबपतियों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है; यहां गरीब और गरीब होता जा रहा है। शासन सोचता है, कर व्यवस्था निरन्तर बढ़ाकर, धनाढयों को कर चोरी के लिए अपरोक्ष रूप से प्रेरित कर अधिकतम राजस्व की वसूली का मजबूत आर्थिक आधार तैयार किया जा सकता है। हर व्यापारी, हर व्यक्ति बेईमान बनने को मजबूर किया जा रहा है। होना चाहिए था कि युवा पीढ़ी को ईशोपनिषद् के प्रथम मन्त्र के आधार पर तैयार किया जाता –

ओ३म् ईशावास्यामिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

संसार के समस्त ऐश्वर्यों का उपभोग करो; पर यह सोचकर करो कि यह सृष्टि सुख ईश्वरजन्य है और तुम्हें यहीं छोड़कर जाना है। यह सोचकर धन के स्वैच्छिक बटवारे को प्रोत्साहन देता है कि घनश्यामदास बिड़ला कितना धन अपने साथ ले गए? 75 हजार करोड़ के स्वामी धीरुभाई अम्बानी कितना धन अपने साथ ले गए। जन कल्याण से सम्बन्धित इनके कार्य ही इन्हें स्मरण कराते रहेंगे और कुछ नहीं। बिड़ला जी द्वारा निर्मित विष्णु मन्दिर, विष्णु मन्दिर नहीं बल्कि बिडला मन्दिर के रूप में प्रख्यात है। यहां भी धर्म से पहले धन अहम है। इस क्षेत्र में भी अंधकार बढ़ रहा है।

अनेकता में एकता, गंगा–जमुना संस्कृति का विश्वास जनमानस में दृढ़ करके हिन्दु सहिष्णुता, भीरुता का मजाक हमेशा उड़ाया जाता रहा है। कम्युनिज्म ईश्वर, अल्लाह या गॉड किसी को नहीं मानता क्योंकि उनकी सैद्धान्तिक मान्यता है कि धर्म अफीम है। इसलिए पूरी ताकत से धार्मिक और ऐतिहासिक आधार को तोड़ने के लिए कृत संकल्पित है। राम, रामसेतु तो तोड़ने का प्रयत्न किया गया है। इसमें सफलता का आंकलन कर आक्रमण को मजबूत किया जावेगा। हमें नहीं मालूम, हम कैसे भारत के निर्माण में अग्रसर हो रहे हैं? अंधकार तो गहराता ही दीख रहा है।

– 22, नगर निगम क्वार्टर्स,
जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर
(म.प्र.) – 474001

महर्षि दयानन्द सरस्वती 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में

प्रचार हेतु सामग्री उपलब्ध

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष से सम्बन्धित प्रचार सामग्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के साहित्य बिक्री केन्द्र पर उपलब्ध है। प्रचार सामग्री सभी कार्यदिवसों में दोपहर 12 से रात्रि 8 बजे के मध्य किसी भी समय प्राप्त की जा सकती हैं।

उपलब्ध सामग्री एवं मूल्य सूची

क्र.सं.	नाम वस्तु	मूल्य
1.	ओ३म् ध्वज (छोटा)	10/–
2.	ओ३म् ध्वज (बड़ा)	20/–
3.	125वां निर्वाण वर्ष बैनर	20/–
4.	दैनिक यज्ञ गुटका	400/– सैकड़ा
5.	घड़ी (बड़ी)	300/– व100/–
6.	घड़ी (छोटी)	75/–
7.	टेबल घड़ी	50/–
8.	पॉकेट कैलेण्डर (दो डिजाइन)	60/– सैकड़ा
9.	सोने की गिन्नी (5 ग्रा.)	बाजार रेट पर
10.	चांदी के सिक्के (10ग्रा.)	बाजार रेट पर
11.	होर्डिंग एवं लोगो सीडी	10/–
12.	सत्य की राह (वीसीडी)	25/–
13.	सत्यार्थ प्रकाश (ओडियो सीडी)	15/–
14.	महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड चित्र (10'' ×12'')	350/–
15.	महर्षि दयानन्द के लेमिनेट चित्र (8''×10'')	40/–
16.	महर्षि दयानन्द के लेमिनेट चित्र (5''×7'')	20/–
17.	महर्षि दयानन्द के लेमिनेट चित्र (3''×5'')	15/–
18.	नेम स्लिप्स (18×1)	5/–
19.	कार स्टीकर (निर्वाण वर्ष)	350/– सैकड़ा
20.	पोल स्टीकर (निर्वाण वर्ष)	150/– सैकड़ा
21.	प्लेन स्टीकर (निर्वाण वर्ष)	300/– सैकड़ा
22.	दीपावली शुभकामना कार्ड (लिफाफे सहित)	750/– सैकड़े
23.	स्कूटर स्टेपनी कवर	20/–
24.	ओ३म् स्टीकर (छोटा)	150/– सैकड़ा
25.	ओ३म् स्टीकर (बड़ा)	500/– सैकड़ा
26.	वेद ईश्वरीय ज्ञान (लघु ट्रैक्ट)	250/– सैकड़ा
27.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (लघु ट्रैक्ट)	250/– सैकड़ा
28.	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (लघु ट्रैक्ट)	350/– सैकड़ा

समस्त आर्यसमाजों, प्रतिनिधि सभाओं, शिक्षण संस्थाओं, आर्य व्यापारिक संस्थानों से निवेदन है कि महर्षि दयानन्द जी के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में अधिकाधिक प्रचार कार्य करें, जिससे जन सामान्य के साथ–साथ सरकार को भी महर्षि दयानन्द जी के विषय में जानकारी प्राप्त हो तथा वे भी स्वामी जी के निर्वाण वर्ष पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर सकें। प्रचार सामग्री मंगाने के लिए **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा–15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001, दूरभाष: 011–23360150, 23365959, टेलिफैक्स : 011–23343737, Email : aryasabha@yahoo.com; Website : www.delhisabha.com** पर सम्पर्क करें। ट्रांसपोर्ट/डाक द्वारा समान भेजने का व्यय पृथक देय होगा।

– विनय आर्य, महामन्त्री

वसन्तोत्सव सम्पन्न

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला प्रचार मण्डल के तत्वावधान में बसन्त मेला एवं सीताष्टमी का भव्य आयोजन पंडित हरिशरण पार्क में श्रीमती शकुन्तला आर्या की अध्यक्ष में पारम्परिक सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

मुख्य अतिथि श्री ओमप्रकाश कोहली, अध्यिक्ष भाजपा दिल्ली प्रदेश ने वीर हकीकत राय को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए सीता माता को नारी जाति का आदर्श बताया।

आर्यसमाज करोल बाग नई दिल्ली के सदस्य एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री अजय भल्ला ने पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार द्वारा लिखित वेद भाष्य श्री ओम प्रकाश कोहली जी को भेंट करते हुए कहा कि इस कार्यक्रम के माध्यम से श्रम्मती शकुन्तला आर्य ने पण्डित जी की स्मृति को ताजा कर दिया है।

सभा में श्रीमती सुभाष कण्व, सुमेधा विद्यालंकार, सरिता सूद, तथा राज पांडे ने वीर हकीकत राय एवं माता सीता को श्रद्धासुमन समर्पित किए।

– शकुन्तला नांगिया, प्रचार मन्त्री

आर्यसमाज नारायणा विहार में शोभायात्रा सम्पन्न

आर्यसमाज नारायणा विहार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 125वें निर्वाण वर्ष में उनके जन्म दिवस के उपलक्ष्य में में 17, 18, 19 फरवरी, 2009 को नारायणा विहार में प्रभातफेरी और शोभायात्रा निकाली। मंगलवार 17 फरवरी को प्रभातफेरी जी, एफ और आई ब्लाक में निकाली। उस दिन का समापन प्रधान श्री सतीश कामरा के आवास पर यज्ञ की पूर्णाहुति से हुआ।

दिनांक 18 फरवरी को ई, ए तथा बी ब्लाक शोभा यात्रा का समापन डॉ. सुदर्शन रहेजा जी के आवास पर एवं वीरवार दिनांक 19 फरवरी को महर्षि दयानन्द जी का जन्म दिवस एच, सी, जी ब्लाक में शोभायात्रा निकाल कर किया गया। उस दिन प्रभात फेरी का समापन कालोनी के सैन्ट्रल पार्क में बृहद यज्ञ करके किया गया। प्रतिदिन यज्ञ का संचालन आचार्य श्री श्यामदेव शास्त्री ने किया।

– रवीन्द्र गर्ग, मन्त्री

आर्यसमाज भोजपुर खेड़ी (उ.प्र.) में शोभायात्रा सम्पन्न

क्षेत्रीय वेदप्रचार समिति किरतपुर के तत्वावधान में आर्यसमाज भोजपुर खेड़ी के संयोजन में महर्षि दयानन्द के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में एक विशाल शोभायात्रा निकाली गई। यात्रा किरतपुर नगर से प्रारम्भ होकर महेश्वरी नंगला, बहादुरपुर अनंगा खेड़ी, असगरपुर, बुडगरी–बुडगरा के ग्राम भ्रमणकर साकड़ा खेड़ी ग्राम होकर आर्यसमाज मन्दिर भोजपुर में समाप्त हुई। शोभायात्रा में आर्यसमाज भोजपुर खेड़ी, हुसैनपुर, माचीपुरा, ढाकी दयानन्द विद्यालय मेकन खसौर किरतपुर एवं स्वाहेड़ी आर्यसमाजों के वाहन ट्रेक्टर ट्राली पर आर्यबन्धु भजन गाते जय–जयकार करते रहे।

– वैद्य आनन्द प्रकाश आर्य

दयानन्द मठ दीनानगर में आर्य महासम्मेलन का आयोजन

पूज्य स्वामी सदानन्द जी सरस्वती की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में दयानन्द मठ, दीनानगर में 12 अप्रैल, 09 (रविवार) को आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

महर्षि दयानन्द जी के 125वें निर्वाण दिवस एवं पूज्य गुरुवर संत शिरोमणि स्वामी सर्वानन्द जी के 109वें जन्मोत्सव पर इस आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

जो महानुभाव, ऋषि–मुनि, विद्वान एक या दो दिन पहले आनेवाले हों पूर्व सूचना दें ताकि सुव्यवस्था की जा सके। आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय देवें।

– दिनेश शास्त्री, सचिव

वर चाहिए

एक जाट परिवार की कन्या के लिए सुयोग्य वर की आवश्यकता है जो कार्यरत हो अथवा अपना निजी कारोबार हो। कन्या की आयु 22 वर्ष (15 फरवरी, 1987) कद 5 फुट 3.5 इंच, रंग गोरा, शैक्षिक योग्यता 10+2, लेडीज सूट्स की कटिंग टेलरिंग का दो वर्षीय कोर्स एवं वर्तमान में फैशन टेक्नोलोजी कोर्स आईटीआई दिल्ली में प्रशिक्षण ले रही है। सम्पर्क करें : –

20402175, 09350502175

पाणिनि कन्या महाविद्यालय का दीक्षान्त समारोह

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का वार्षिकोत्सव 20–21 मार्च, 2009 को सम्पन्न होगा। इस अवसर पर गत 23 जनवरी, 07 को वसन्त पंचमी से आम्भ किए गए निर्माण के अन्तर्गत नव निर्मित महर्षि पाणिनी प्रज्ञा अनुसंधान केन्द्र की अभिनव रूपरेखा प्रस्तुत की जाएगी। साथ ही प्रति वर्ष की भांति नवीन स्नातिकाओं का समावर्तन दीक्षान्त समारोह व कन्याओं के बौद्धिक कार्यक्रम, शस्त्रास्त्र शौर्य प्रदर्शन होंगे।

– मेधादेवी

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल्स पटना जोन के विद्यालयों में उप सभा के सह क्षेत्रीय निदेशक डॉ. आर. के. चौहान के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस को शहीदी दिवस के रूप में मानया। स्वामी जी का जीवन अछूतोद्धार के लिए समर्पित रहा है, इसलिए विद्यालय परिवार के लोगों ने हरिजन टोली, डोमटोली आदि में जाकर कड़ाके ठंड में सिकुड़ते हुए वस्त्रहीन बालकों, युवाओं एवं बूढ़ों को वस्त्र तथा कंबल बांटे।

– डॉ. आर. के. चौहान, प्रधान

शोक समाचार

श्री अनिल भल्ला का निधन

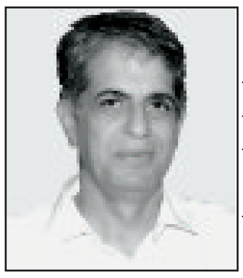

आर्यसमाज सरीता विहार के सदस्य श्री अनिल भल्ला सुपुत्र स्व0 पण्डित भीमसेन विद्यालंकार का गुरुवार दिनांक 19 फरवरी,09 को सायं 6 बजे तीन–चार दिन की बीमारी के बाद निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से अगले दिन 20 फरवरी को लोधी रोड श्मशान घाट पर सम्पन्न हुआ।

उनकी शोक सभा 22 फरवरी को आर्यसमाज सरीता विहार में सम्पन्न हुई, जिसमें विभिन्न आर्यसमाजों के पदाधिकारी एवं अन्य गणमान्य महानुभावों ने अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

वे अपनी पीछे धर्मपत्नी श्रीमती विभा भल्ला, सुपुत्र श्री प्रणव भल्ला, सुपुत्री मनस्विनी जो अमेरिका में अर्थशास्त्र में डाक्टरेट के लिए अध्ययनरत हैं।

उनके परिवार के अन्य सदस्य बड़े भाई श्री रामपाल विद्यालंकार रिटायर्ड प्रोफेसर, अजय भल्ला वरिष्ठ पत्रकार तथ आर्यसमाज करोल बाग के वरिष्ठ सदस्य, श्री अरुण भल्ला छोटे भाई तथा दो बहनें श्रीमती उमा भल्ला एवं शान्ता मल्होत्रा हैं।

श्री ओमप्रकाश भसीन का निधन

आर्यसमाज हौजखास, नई दिल्ली के वरिष्ठ सदस्य श्री ओमप्रकाश भसीन का निधन 95 वर्ष की अवस्था में 15 फरवरी, 09 को हो गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश–2, नई दिलली में 19 फरवरी को सम्पन्न हुई।

श्री खुशीराम अग्रवाल नहीं रहे

आर्यसमाज हौजखास, नई दिलली के पूर्व लेखा निरीक्षक श्री खुशीराम अग्रवाल का 92 वर्ष की अवस्था में दिनांक 20 फरवरी, 09 को हो गया। इउनकी शोक सभा 7 मार्च, 2009 को गीत भवन हौजखास में मध्याह्न एक से सम्पन्न हुई।

श्री देवदत्त बाली का निधन

सुप्रसिद्ध आर्यमनीषी, वरिष्ठ पत्रकार पं. देवदत्त बाली जी का देहरादून केहिमालयन इंस्टीट्यूट में दिनांक 21 जनवरी, 09 निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन लक्खी बाग श्मशान में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

महात्मा नारायण दास ग्रोवर की प्रथम पुण्य तिथि

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के उप प्रधान डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल्स पटना जोन के क्षेत्रीय निदेशक पूर्वोत्तर में डीएवी के जनक प्रसिद्ध शिक्षाविद, स्व. महात्मा नारायण दास ग्रोवर की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर 5 फरवरी, 09 को पटना प्रक्षेत्रय स्तर पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

2 मार्च, 2009 से 8 मार्च, 2009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक ०५/०६-०३-२००९
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००६-०८
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह

कृपया ध्यान दें!

प्रचार सामग्री पर भारी छूट का लाभ उठाएं। यह छूट केवल होली के दिन 10 मार्च को ही उपलब्ध होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आयोजित आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह में सम्मलित होने वाले समस्त आर्यजनों/ आर्यसमाजों/ आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि :-

1. अपने परिवार एवं मित्रों के परिवारों के साथ अधिक से अधिक संख्या में भाग लें। विशेषकर बच्चों को अवश्य ही साथ लाने का प्रयास करें।

2. **छोटे बच्चों के लिए झूले तथा मनोरंजन** के लिए विशेष व्यवस्था होगी जिससे कि वे उनका आनन्द लें।

3. होली खेलने हेतु **चन्दन की डिब्बियां तथा फूलों के डिब्बे** आयोजन स्थल पर लगाए गए स्टाल पर बिक्री हेतु उपलब्ध होंगे। आप यदि अपने साथ फूल ला सकें तो आपका स्वागत है। बिक्री से हमारा उद्देश्य है कि आप अगले दिन दुलहेंडी को भी मात्र चन्दन तथा फूलों से ही होली खेलने की प्रेरणा अन्य लोगों को दें तथा अन्य कृत्रिम रंगों के प्रयोग से बचें।

4. प्रसिद्ध गीत **"होली सो होली, भुला दो उसे" की सीडी मात्र 20/- रुपये में** स्टाल पर उपलब्ध होगी।

5. आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह के अवसर पर सभा के मुख पत्र **"साप्ताहिक आर्यसन्देश" के आजीवन सदस्य बनने वाले प्रत्येक सदस्य को 100/- रुपये मूल्य की एक दीवार घड़ी बिल्कुल मुफ्त दी जाएगी। आजीवन सदस्यता शुल्क 750/- रुपये मात्र है।**

6. आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं नव वर्ष के शुभकामना कार्ड होली के अवसर पर आयोजित स्टाल पर उपलब्ध होंगे। आप अपने प्रियजनों, रिश्तेदारों तथा अन्य सभी महानुभावों को **नव वर्ष विक्रमी सम्वत् 2066 की शुभकामनाएं देने के लिए मात्र 650/- रुपये सैंकड़ा** शुभकामना कार्ड खरीदें और वितरित करें।

7. आर्यसमाज के प्रचार प्रसार बनी फिल्म **"सत्य की राह"** इस अवसर पर **मात्र 20 रुपये में** उपलब्ध होगी। आप इसे बच्चों को पुरस्कार रूप में, बड़ों को भेंट आदि के रूप में भी बांट कर प्रचार कार्य में अपना योगदान दे सकते हैं। वितरण हेतु अधिकाधिक खरीदें।

8. उपस्थित समस्त आर्यजनों के लिए **भोजन की पर्याप्त व्यवस्था** होगी। धैर्य पूर्वक कार्यक्रम का आनन्द लें और भोजन व्यवस्था को बनाए रखने में सहयोग दें।

– विनय आर्य, महामन्त्री

प्रतिष्ठा में,
श्री...

होली के पावन पर्व पर भव्य भजन संध्या

स्थान : रघुनाथ मन्दिर, अमर कालोनी, लाजपत नगर–4, नई दिल्ली–24

बुधवार दिनांक 11 मार्च, 2009

भजनोपदेशक : आचार्य कंचन कुमार

संयोजक : श्याम सुन्दर, हरिश कुमार गुप्ता

सम्पर्क : 9958922829

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 से छपवाकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com** से प्रकाशित किया।

सम्पादक : **ब्र० राजसिंह आर्य**   सह सम्पादक : **विनय आर्य**   व्यवस्थापक : **सुशील महाजन**   सह व्यवस्थापक : **डॉ० ओमप्रकाश भटनागर**